IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

मुगलकालीन सैन्य प्रबंधन : एक ऐतिहासिक अध्ययन

Dr. (Smt.) Poonam Mishra[1] and Rajbhan Charmkar[2]
Professor, Department of History[1]
Research Scholor, Department of History[2]
Government T. R. S. College, Rewa, Madhya Pradesh, India

Abstract: सेना देश एवं प्रशासन की अभिन्न अंग होती है। किसी भी युग की सैन्य प्रणाली, उस समय की सुरक्षा, शांति एवं विकास की स्थिति को भली–भाँति जानकारी उपलब्ध कराती है, जो कि आज के समय के सैन्य प्रशासन एवं युवाओं के मार्गदर्शन हेतु अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है। भारत में मुगल वंश की स्थापना 1526 ई. में बाबर ने किया था जो कि सेना के बल पर हुई थी। बाबर से लेकर औरंगजेब तक तथा इसके बाद भी सैन्य व्यवस्था का विकास काफी हुआ है। इस काल में किये गये सैनिक विकास आज भी महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तावना:

मुगल साम्राज्य की स्थिरता और शक्ति का आधार उसकी सेना थी। साम्राज्य विस्तार आंतरिक विद्रोहों विदेशी आक्रमणों से देश की रक्षा के लिये स्थायी तथा सुसज्जित सशस्त्र सेना का होना आवश्यक था।[1] अकबर के पूर्व मुगल सेना संगठन मध्य ऐशियाई संगठन का प्रतिरूप था। बाबर और हुमायूँ के काल में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। मुगलों की सैन्य व्यवस्था मनसबदारी प्रथा पर आधारित थी। मनसबदारी व्यवस्था के आधार पर लगभग 4 लाख की विशाल सेना का गठन किया, जिसमें दो प्रकार के सैनिक थे– 1. अहदी और 2. दाखिली सेना। अहदी सम्राट के अंगरक्षक होते थे। केन्द्रीय मंत्री बख्शी उस पर नजर रखता था। उनके प्रशिक्षण और वेतन की जिम्मेदारी प्रत्यक्ष रूप से केन्द्रीय सरकार की होती थी। दाखिली सेना की भर्ती तथा वेतन की व्यवस्था राज्य की ओर से होती थी लेकिन उन्हें प्रशिक्षण मनसबदार देते थे। वस्तुतः मनसबदारों के अधीन सेना को वेतन प्रत्यक्ष रूप से सरकार के द्वारा न देकर मनसबदार के माध्यम से सरकार देती थी। भारत में सबसे अधिक समय तक राज्य करने वाले मुगल थे। मुगल वंश के अत्यधिक उन्नति तथा चहुंमुखी विकास का कारण उनकी श्रेष्ठ सैनिक व्यवस्था थी, क्योंकि सैनिकों के द्वारा ही साम्राज्य में शांति, सुरक्षा, व्यवस्था बनी रहती थी। मुगलों की सेना में विभिन्न देशों और जातियों के लोग शामिल थे मुगल सेना में तूरानी, ईरानी, अफगान, भारतीय मुसलमान, राजपूत दक्खिनी आदि सैनिक होते थे। इनमें हिन्दू एवं मुसलमान दोनों थे।[2] मुगल शासकों ने सेना को पाँच भागों में विभक्त किया, निम्न प्रकार से हैं– पैदल सेना, घुड़सवार सेना, हस्ति सेना, नौ सेना तथा तोपखाना इत्यादि प्रत्येक का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

1. पैदल सेना

पैदल सेना में कई प्रकार के लोग सम्मिलित थे। अबुल फजल लिखता है, :: ये अनेक प्रकार के होते थे और अद्भुत कार्य करते थे।'' मुगल सेना में बन्दूकची के अतिरिक्त दरबान, पहलवान, कहार, खिदमतिया, मेवरा, चेला आदि प्रमुख थे।[3] दरबान महलों की रक्षा का कार्य करते थे। इनका वेतन 100–120 दाम प्रतिमाह था। खिदमतिया महल के आसपास की सुरक्षा और आदेशों का पालन करते थे। मेवरा, मेवात के होते थे। शमशेरबाज तलवार और ढाल से सुसज्जित होते थे। पहलवान[4] पत्थर फेंकने का कार्य करते थे। कहार पालकी, सिंहासन और डोली ढ़ोने के काम आते थे। पैदल सेना में बन्दूकची सबसे महत्वपूर्ण थे। औरंगजेब के काल में बन्दूकचियों का वेतन 15 रुपये प्रतिमाह था और साधारण पैदल सैनिक का वेतन 7 रुपये प्रतिमाह था।[5]

2. घुड़सवार सेना

घुड़सवार सेना मुगलों की सेना का प्रधान अंग था। यह प्रमुख विभागों में विभाजित थी। 1. मनसबदारों द्वारा प्रदत्त घुड़सवार सेना। 2. अहदी, 3. दाखिली।

मनसबदारों द्वारा प्रदान किए जाने वाले घुड़सवारों पर घोड़े दागने की प्रथा और घुड़सवारों की हुलिया लिखना लागू होता था। मनसबदारों को जागीर के रूप में वेतन प्राप्त होता था और समय–समय पर जाँच के लिये सेना उपस्थित करते थे सैनिकों को लोहे के टोप कवच लोहे के पैताबे, ढाल, तलवार दिये जाते थे।

अहदी घुड़सवारों की भर्ती सीधे केन्द्र द्वारा होती थी। ये साम्राज्य में सर्वश्रेष्ठ घुड़सवार माने जाते थे।[6] इनके लिये अलग दीवान तथा बख्शी नियुक्त होता था। उनका वेतन 50 रुपये से भी अधिक था। उनके घोड़ों को वर्ष में तीन बार अस्त्र शस्त्रों सहित निरीक्षण के लिये अधिकारियों के सामने पेश किया जाता था।

दाखिली सैनिक अर्द्ध अश्वारोही तथा अर्द्ध सैनिक की श्रेणी में आते थे। दाखिली सैनिकों की भर्ती सीधी राज्य द्वारा होती थी और लेकिन उन्हें मनसबदारों के अधीन रख दिया जाता था। दो दाखिली सैनिकों के पास एक घोड़ा होता था। दाखिली सेना में एक चौथाई बन्दूकची तथा बाकी तीर अन्दाज होते थे। बढ़ई, लौहार, भिश्ती आदि इस श्रेणी में आते थे।

3. हस्ति सेना

अकबर ने हस्ति सेना के प्रबन्ध के लिए पील खाना नामक एक अलग विभाग संगठित किया। अकबर के काल में 6751 हाथी थे लेकिन जहाँगीर के के काल में इनकी संख्या घटकर 1400 रह गई। हाथियों का प्रयोग तोप ढोने के लिए किया जाता था।[7] एक हाथी दो तोप और दो सिपाहियों को ले जा सकता था। कई बार इन्हें शत्रु के किले के फाटक तोड़ने के लिये प्रयोग में भी लाया जाता था। हाथियों की कई श्रेणियाँ होती थीं मनसबदारों को भी रखने पड़ते थे। कई बार सेनापति हाथी पर सवार होकर सेना का संचालन करते थे।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

4. तोपखाना

मुगलवंश के संस्थापक बाबर के काल में दो सौ तोपें मुगल सेना में थी। उस्ताद अली और मुस्तफा उसके काल के दो प्रसिद्ध तोपची थे। हुमायूँ के समय में बारूद से चलने वाली भारी तोपें मुगल सेना में थीं। मुगल काल में भारी तथा हल्की दानों प्रकार की तोपों का निर्माण किया गया। अबुल फजल के अनुसार, ''मुगल काल में इतनी बड़ी तोपे बनाई गई थी कि प्रत्येक 12 मन का गोला फेंक सकती थी।'' अकबर के काल में गजनाल और नरनाल (जो क्रमशः हाथी और आदमी द्वारा ले जाई थीं) तोपों के अतिरिक्त शुतरनाल (अंत पर ले जाई जाने वाली) और जंबूर (मधुमक्खी जैसे आवाज वाली) और धमाका नाम की तोपें भी होती थीं।[8] तोपखाने का प्रमुख अधिकारी मीर आतिश अथवा दारोगा–ए–तोपखाना कहलाता था। मुगलों ने कालान्तर में फ्रांसीसी और पुर्तगालियों को भी तोपखाने में नियुक्त किया था।

5. नौ सेना

मुगल काल में नौ सेना अधिक शक्तिशाली और अधिक निपुण नहीं थी। अकबर के काल में (1573) सर्वप्रथम सेना के इस अंग का गठन किया गया। सेना के इस अंग का प्रमुख अधिकारी मीर–ए–बहर कहलाता था।[9] ये विभाग कई काम करता था जैसे मजबूत नावें तैयार कराना अनुभवी और कुशल मल्लाहों को नियुक्त करना, नदी घाटी की देखभाल करना, यात्रियों को नदी पार कराना, बन्दरगाहों पर चुंगी वसूल करना। अकबर के बाद सेना के इस अंग को सुदृढ़ करने की ओर औरंगजेब ने ध्यान दिया। मनूची लिखता है, ''यूरोपीय समुद्री डाकुओं द्वारा हाजियों और जहाजों को लूटने के कारण औरंगजेब ने नौ सेना को मजबूत बनाने का फैसला किया।'' मुगल सैनिकों को वेतन नगद या जागीर के रूप में दिया जाता था।

मुगल सैन्य व्यवस्था के दोष

साम्राज्य के विस्तार और उसकी आवश्यकताओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि मुगलों की स्थायी सेना दुर्बल थी। प्रायः केन्द्र की मनसबदारों की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता था।[10] चूँकि सैनिकों को वेतन मनसबदारों के माध्यम से मिलता था इसलिए उनके अधीन रहने वाले सैनिक प्रायः सम्राट की बजाय उनके प्रति अधिक वफादार होते थे। मनसबदारों में प्रायः परस्पर ईर्ष्या होती थी और इसका प्रभाव सेना पर पड़ना स्वाभाविक था। मनसबदार सिपाहियों को प्रायः ठीक समय पर वेतन नहीं देते थे इसलिये उन्हें भरण–पोषण के लिए कई बार कठिनाई होती थी जिसका सेना की क्षमता पर बुरा असर पड़ता था।[11] मुगलों की नौ सेना वास्तव में नाममात्र की सेना थी। मुगलों ने इंग्लैण्ड, फ्रांस और पुर्तगाल की तरह बड़े और शक्तिशाली जहाज बनाने की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। मुगलों ने तोपखाना विभाग में फ्रांसीसियों और पुर्तगालियों की नियुक्त किया। फलस्वरूप धीरे–धीरे सेना का यह विभाग उन्हीं के हाथ में चला गया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

निष्कर्ष :

मुगलकालीन सैन्य व्यवस्था एक मजबूत सैन्य व्यवस्था थी। इसीलिये सेना को मुगल साम्राज्य का आधार स्तम्भ माना जाता था। अगर मुगलों ने भारत पर इतने लम्बे समय तक शासन किया था, तो उसके पीछे निःसंदेह ही उनकी दृढ़, अच्छे ढंग से सुसज्जित और मजबूत सैन्य व्यवस्था थी। मुगलों ने अपनी सेना का वर्गीकरण भी बहुत ही बेहतरीन तरीके से किया था। मुगल बादशाहों बाबर,हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, और औरंगजेब आदि ने अपनी मुगल सेना का संगठन कुशल तरीके से किया था और यही कारण था कि, वे काफी लम्बे समय तक भारत पर शासन करने में सफल रहे।

संदर्भ स्रोतः

1. पाठक, रश्मि, अकबर से औरंगजेब तक, अर्जुन पब्लिशिंग नई दिल्ली, 2003 पृ. 162
2. श्रीवास्तव, हरिशंकर, मुगल शासन प्रणाली, दिल्ली, 1978 पृ. 194
3. लूणिया वी.एन. मुगल शासन व्यवस्था, कमल प्रकाशन इन्दौर, प्रथम संस्करण 1987, पृ. 136
4. सिंह राजेश कुमार, मुगल सैन्य पद्धति, (शोध–प्रबंध) 1996 पूर्वाचल विश्व., पृ. 26
5. सिंह डॉ. गिरीशचन्द्र, टण्डन डॉ. रामकृष्ण, अग्रवाल डॉ. प्रशांत, भारतीय युद्ध कला, 2014 शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ. 161
6. पाण्डेय, अवध बिहारी, उत्तर मध्यकालीन भारत, सुरजीत पब्लिकेशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ. 468 भदौरिया संजना सिंह, मुगलों की सैन्य व्यवस्था का विश्लेषणात्मक अध्ययन, 2011 (शोध–प्रबन्ध), छत्रपति शाहू जी महाराज विश्व., कानपुर पृ. 57
7. डेविड, मेजर ऐल्फ्रेड (अनु. चौपड़ा एस.डी.) भारतीय युद्धकला, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ एकादमी भोपाल, 1972 पृ. 09
8. इर्विन विलियम, द अर्मी ऑफ द इंडियन मुगल्स, दिल्ली, 2004, पृ. 135–37
9. मेहता, जे–यल. मध्यकालीन भारत का वृहत इतिहास, जवाहर पब्लिशर्स नई दिल्ली, 2001, पृ. 371
10. रस्तौगी डॉ. दयाप्रकाश, मध्यकालीन भारत शारदा प्रकाशन मेरठ, 1986–87, पृ. 213
    द्विवेदी आर. एस., मध्यकालीन भारत, विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 372